शिव आमंत्रण

RAJHIN 16601/20/1/2013-TC

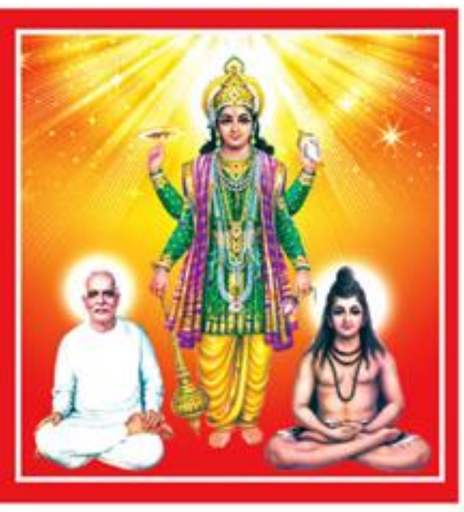

वर्ष: 01, अंक: 04 | मूल्यनिष्ठ शिक्षा पर विशेष | 1 सितंबर 2013, सिरोही, पृष्ठ: 4,

बाबा ने दी मूल्यों की शिक्षा ....पेज 2

मूल्यों से संवारे जीवन की बगिया ....पेज 2

विश्वविद्यालय में होगी मूल्यों की पढ़ाई ....पेज 3

परमात्मा दे रहें शिक्षा ....पेज 3

मूल्यों से तय होंगे जिंदगी के नए मुकाम.... पेज 4

मानव मूल्यों की शिक्षा भी जरूरी ....पेज 4

... तो विकसित हो जाएगी सोलह कलाएं... ....पेज 4

अलौकिक शिक्षा से बन रहा नया समाज

शिक्षा से ही बदलेगी समाज की दिशा

आज भौतिक शिक्षा से लुप्त होते मूल्य किसी भी दृष्टि से मनुष्य के हित में नहीं है। संस्कार विहीन समाज मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरे की घंटी है। परंतु चिंता की जरूरत नहीं क्योंकि परमात्मा नई शिक्षा से नए समाज के निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य करा रहे हैं...

शिक्षा का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है अर्थात् अन्य गुणों का विकास करने के साथ- साथ उनको दिव्य कर्म करना सिखाना भी शिक्षा का उद्देश्य है। इसे ही विद्यार्थी का दिव्यीकरण कहा जाता है। इसी प्रक्रिया से विद्यार्थी का जीवन सफल होता है। शिक्षा व्यक्तित्व का निर्माण कर उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पारंगत करती है।

मानव जीवन का उद्देश्य है पुरुषार्थ करना है। इसके लिए हमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक सभी नियमों का ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा तो समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष की आधारशिला है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है और इसका लक्ष्य चरित्र निर्माण करना है।

शिक्षा आयोगों ने बताया अनिवार्य

सन् 1982 से आज तक जितने भी शिक्षा आयोगों का गठन किया गया सभी ने शिक्षा में आध्यात्मिकता को एवं मूल्यों को अनिवार्यत: स्वीकार किया है। गांधी जी ने शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी शर्त माना था। रवीन्द्रनाथ टैगोर और डॉ. राधाकृष्णन ने भी यह घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियां विनाश का कारण बनेंगी। जो कि आज सामने दिखाई दे रहा है। सत्य, प्रेम तथा अच्छाई के मार्ग की बाधाओं को पार करने का सामर्थ्य एक मात्र विशुद्ध आध्यात्मिकता से सम्पन्न मूल्यनिष्ठ शिक्षा ही प्रदान कर सकता है।

शिक्षा से होता विवेक जागृत

शिक्षा जीवन का वह महत्वपूर्ण अंग है जो हमें बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक अनुशासित, संयत और प्रगतिशील बनाएं रखती है। शिक्षा से मनन शक्ति, चेतना, सद्बुद्धि, विचारशीलता तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है।

जब मनुष्य अपनी वास्तविक शिक्षा और ज्ञान से विमुख हो जाता है तो चाहे वह विश्वविद्यालय हो, कॉलेज या स्कूल उसमें मनुष्यों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा कभी भी व्यक्ति का आंतरिक सशक्तिकरण या मूल्यनिष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण नहीं कर सकती है। वजह साफ है कि आत्मा में जो शाश्वत और सनातन मूल्य है बिना आध्यात्मिक शक्ति एवं परमात्मा के सानिध्य के जागृत नहीं किया जा सकता है।

मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा

आबूरोड शांतिवन में आयोजित मूल्यनिष्ठ शिक्षा के दीक्षांत समारोह में उपस्थित विद्यार्थी।

परमात्मा पढ़ा रहे मूल्य शिक्षा

समय का चक्र कहें या परमात्मा का संविधान, जब ऐसी घड़ी इस सृष्टि पर होती है तब शिक्षकों का शिक्षक और गुरुओं का गुरु स्वयं ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा शिव पुन: इस धरती पर अवतरित होकर एक ऐसे विश्व विद्यालय की स्थापना करते हैं, जिसमें जाति, उम्र, धर्म, लिंग, संप्रदाय के भेदभाव की दीवारें नहीं होती है। यहां हर एक मनुष्य मूल्यों के सर्वोच्च शिखर पर होता है। यहां न कोई मजहब न किसी तरह के भेदभाव के लिए कोई स्थान होता है। ऐसी दुनिया बनाने के लिए स्वयं परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन का माध्यम लेकर मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना कर रहे हैं।

उम्र की नहीं कोई सीमा

परमात्मा के विश्व विद्यालय में उम्र की कोई सीमा नहीं है। क्योंकि परमात्मा आत्माओं को पढ़ाते न कि शरीर को। परमात्मा का मकसद आत्मा की शक्ति को जागृत कर सोलह कलाओं से संपन्न बनाना है। यह समय पूरे विश्व की आत्माओं के लिए अतिमहत्वपूर्ण है क्योंकि पूरे कल्प में सिर्फ एक ही बार ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना होती है और परमात्मा उसका शिक्षक होते हैं। परमात्मा का यह आह्वान इसलिए भी है कि समय की घड़ियां बदलाव के मुहाने पर है। हम बदले या न बदले परंतु समय कभी हमारे लिए रूकेगा नहीं। यही परमात्मा का संदेश है और शिक्षा भी।

हर पल होती है परीक्षा

ईश्वरीय संविधान और शिक्षा दोनों ही मनुष्यों को ऐसे समय में प्राप्त होते है जब आत्माओं के अंदर सिर्फ अवगुणों की ही विरासत होती है। दुनिया के दूषित परिवेश में मूल्यों को धारण करना और आत्मा को उच्च संस्कारों से पोषित करना कठिन तप है। परंतु परमात्मा शिक्षक एक ऐसे शिक्षक की भूमिका निभा रहे हैं जिसमें माता-पिता, भाई-बंधु का भी सम्बंध निहित होता है। इसलिए इस ईश्वरीय शिक्षा के पथ पर चलने में हर पल परीक्षा की घड़ी होती है और आसुरी वृत्तियों के साथ परीक्षा की घड़ी भी।

... 21 जन्म की उपलब्धि

यह ऐसी पढ़ाई है जिसमें हमारा वर्तमान तो बनता ही है साथ में 21 जन्मों का भी भविष्य सुरक्षित हो जाता है। इस पढ़ाई का रिजल्ट पढ़ाई के साथ ही मिलना प्रारंभ हो जाता है। परमात्मा के सानिध्य से हमारा बोलचाल, रहन-सहन और सोच का स्तर सकारात्मक, मूल्यनिष्ठ और कल्याणकारी हो जाता है। स्वयं परमात्मा शिक्षक बनकर हमें प्रतिदिन सुबह से ही मार्गदर्शन करते हैं। उनकी हर पल की शिक्षा और मार्गदर्शन से हम सहज ही देवत्व की ओर अग्रसर हो जाते हैं। इस संगमयुग में एक जन्म की पढ़ाई हमारे 21 जन्मों का द्वार खोल देती है।

समर्पण समारोह के दौरान बहनें ईश्वरीय शिक्षा के मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हुए।

परिवर्तन का आधार मूल्यनिष्ठ शिक्षा

कहा जाता है मूल्यनिष्ठ नागरिक ही मूल्यनिष्ठ समाज का निर्माण करता है। व्यक्ति जितना पढ़ा-लिखा, सभ्य, मूल्यनिष्ठ, सुसंस्कृत एवं चरित्रवान होगा समाज भी उतना ही मूल्यनिष्ठ होगा। जीवन में मूल्यों का समावेश ही सामाजिक व्यवस्था को बदलने का आधार है। इसके लिए हमें बच्चों के बचपन से ही जीवन मूल्य, सद्व्यवहार, शिष्टाचार, ईमानदारी, सच्चाई, सत्यता आदि की शिक्षा देनी चाहिए। क्योंकि बच्चे उस कच्चे घड़े के समान होते हैं जिसे हम जो आकार देना चाहे दे सकते हैं। आज सबसे बड़ी समस्या है कि माता-पिता के ही संस्कार श्रेष्ठ व सुसंस्कृत नहीं है तो वह अपने बच्चों संस्कारों की शिक्षा कैसे देवें? उनकी ही कथनी और करनी एक समान न होने से बच्चों पर उनकी बात का प्रभाव नहीं पड़ता है।

समाज में गिरता मूल्यों का नैतिक स्तर, खत्म होती संबंधों की मर्यादा, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव और आधुनिक जीवन शैली से हमारी सामाजिक व्यवस्था आज संकट में है। शिक्षा से जहां एक ओर लोगों का जीवन स्तर बदला है, वहीं दूसरी ओर मूल्यों के ह्रास से समाज का ताना-बाना कमजोर होता जा रहा है।

शिक्षा से संवरता है जीवन

शिक्षा से ही जीवन बनता है, संवरता है और नए निर्माण के क्षितिज उन्मुक्त होते हैं। यह सब तभी संभव है जब शिक्षा का उद्देश्य सही हों। ज्ञान प्राप्त करना और सेवा के लिए समर्पित होना शिक्षा का मूलभूत आदर्श रहा है। इसकी विस्मृति होने के कारण सारी व्यवस्था गड़बड़ा रही है। इसका सबसे पहला प्रभाव पड़ा है शिक्षक और विद्यार्थी के संबंधों पर। एक समय था जब शिक्षक और विद्यार्थी के बीच गुरु-शिष्य का रिश्ता था। विद्यार्थी के मन में शिक्षक के प्रति सम्मान का भाव था। शिक्षक अध्यापन को अपना व्यवसाय नहीं कर्त्तव्य मानते थे। कर्त्तव्य के आसन पर जब से जीविका प्रतिष्ठित हुई, सम्मान का भाव लोप हो गया।

परमात्मा बना शिक्षक

अच्छी शिक्षा हमेशा मानव का उत्थान करती है। मुझे गर्व होता है कि बचपन में ही स्वयं परमात्मा मेरा शिक्षक बन गया। मुझे याद ही नहीं है कि मैंने कभी दूसरों का दिल दुखाया या झूठ बोली। बस परमात्मा ने अपनी इस महान शिक्षा से मेरे जीवन में ऐसा उजाला भरा कि आज भी रग-रग में दौड़ रही है। सुबह उठने से लेकर सोने तक सारी दिनचर्या परमात्मा की दी हुई मूल्यनिष्ठ शिक्षा के अनुरूप होती है। मेरा यही प्रयास रहता है कि नई दुनिया बनाने के लिए जो परमात्मा की शिक्षा है वह दुनिया के सभी आत्माओं को दूं। क्योंकि इससे लोगों की जिंदगी तो बदलेगी ही साथ ही वे परमात्मा के समीप जाकर उनसे सुख, शांति और आनन्द की अनुभूति करें। आज इसकी बहुत जरूरत है। आज लाखों भाई-बहनें परमात्मा के द्वारा दी जा रही मूल्यनिष्ठ शिक्षा से अपना जीवन श्रेष्ठ बना रहे हैं। परमात्मा एक सुन्दर समाज का निर्माण कर रहा है। ऐसे में ना केवल युवाओं को बल्कि समस्त मानव जाति को इसे अपनाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे उनकी जिंदगी में एक मूल्यनिष्ठ शक्ति और ऊर्जा का संचार हो सके।

राजयोगिनी दादी जानकी जी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू, राजस्थान

शिक्षा हो मूल्य आधारित

शिक्षा व्यक्ति की महत्ता बढ़ाती है और मूल्य आधारित शिक्षा हमें समाज को सार्थक मार्ग पर ले जाने में मदद करती है। शैक्षिक उत्कृष्टता के साथ आध्यात्मिक विकास का प्रयास इस युग में खोए हुए मूल्यों और परम्पराओं को फिर से प्राप्त करने की दिशा में सही कदम है। भारत में शिक्षा का विकास देश की शासन व्यवस्था को लचीला बनाए रखने का प्रमुख कारक है। भारतीय दर्शन और संस्कृति में हमारी अगाध आस्था है और हमारा यह मानना है कि ऐसे मूल्यों के बीच तालमेल से प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा।

प्रणब मुखर्जी, राष्ट्रपति, भारत

सराहनीय कार्य

वर्तमान समय शिक्षा स्कूल के क्लास रूम के चार दीवारों में सीमित नहीं होना चाहिए। ब्रह्माकुमारीज द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा कार्य सराहनीय है।

अनिरूद्ध जगन्नाथ, राष्ट्रपति, मॉरीशस

इस महाअभियान का स्वयं परमात्मा कर रहे नेतृत्व

... और बना सकते हैं कई जन्मों का भाग्य

इस कल्याणकारी संगमयुग में परमात्मा ने न केवल छोटे बच्चों को बल्कि समस्त मानव जाति को मूल्यवान, पुरूषोत्तम एवं श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए इस महा शिक्षा के महाअभियान का नेतृत्व कर रहे हैं।

परमात्मा की शिक्षा से अज्ञानता के दलदल में डूबे लोगों का ज्ञान की रोशनी से अज्ञानता का अंधकार दूर होगा। यह वह समय है जिसमें हम परमात्मा की दी हुई शिक्षाओं को जीवन में अपनाकर जन्मों-जन्म का भाग्य बना सकते हैं। मूल्य आधारित शिक्षा ही हमें सदा सही पथ पर अग्रसर करती है। आज यह आवश्यक हो गया है कि बच्चों को मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया जाए। इसके लिए शिक्षकों को अपने आचरण, व्यवहार और व्यक्तिगत पवित्रता अर्थात तन, मन, धन, वचन और कर्म पर ध्यान देना होगा। भारत में शिक्षकों का स्थान प्राचीन काल से ही सर्वोपरि रहा है। वे विद्यार्थियों के ही नहीं बल्कि उनके माता-पिता के भी गुरु होते थे।

शिक्षकों को आज भी अपनी जिम्मेवारी समझनी होगी। साथ ही माता-पिता को बचपन से ही घर का माहौल ऐसा बनाना चाहिए जिससे बच्चे अपनी सभ्यता को न भूल सके। उन्हें बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार करना चाहिए।

उनके किसी भी समस्या को समझदारी के साथ हल करने में उनकी मदद करनी चाहिए। सभ्य माता-पिता ही अपने बच्चों को सभ्य, समाजोपयोगी और राष्ट्रोपयोगी बना सकते हैं। इन बातों पर ध्यान देकर ही हम एक सुसंस्कृत परिवार और सुसंस्कृत राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। आज दुनिया में भ्रष्टाचार, पापाचार, घूसखोरी, लड़ाई-झगड़े, रिश्तों की गिरती मर्यादा मूल्यनिष्ठ शिक्षा के अभाव का ही नतीजा है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में सराहनीय कार्य पर दादी को डॉक्टरेट

मूल्यनिष्ठ शिक्षा एवं आध्यात्मिकता में विश्वभर में सराहनीय योगदान देने पर ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी को वर्ष 2012 में गीतम विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम ने डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया। आज यह विश्व विद्यालय अपने नौ हजार से अधिक सेवाकेंद्रों के माध्यम से 138 से अधिक देशों में मूल्यशिक्षा एवं अध्यात्म की रोशनी फैला रहा है।

आंतरिक शक्तियों का ह्रास

शिक्षा की दिशा में मूल्यों की कमी होने के कारण हमारी सोच इतनी व्यावसायिक और संकीर्ण हो गई है कि हम सिर्फ उसी शिक्षा की मूल्यवत्ता पर भरोसा और विश्वास करते हैं जो हमारे सुख-सुविधाओं के साधन जुटाने में हमारी मदद कर सके। बाकी चिंतन की धारा से हम विमुख होते जा रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यों की महती आवश्यकता है। आज शिक्षा का अर्थ सिर्फ परीक्षा, अंक प्राप्ति, प्रतिस्पर्धा और व्यवसाय बनकर रह गया है। समय की तीव्र रफ्तार के साथ मानव ने भौतिक जगत की ऊंचाइयों को तो छू लिया है, परंतु इसी के साथ उसकी आंतरिक शक्तियां भी समाप्त होती जा रही है। जिसका परिणाम हमें प्रतिदिन न्यूज पेपरों और टीवी चैनलों में देखने को मिलता है। आज का मानव परवश है और दिन-प्रतिदिन दिशाशून्य बनता जा रहा है। जिसके फलस्वरूप उसका स्वयं से व परिवार से रिश्ता टूटता जा रहा है और आंतरिक शक्तियों के विषय में उसकी सोच संकीर्ण होती जा रही है। यह मनुष्य के अज्ञानता के ही तो लक्षण हैं।

संपादकीय

बीके करुणा

मूल्यनिष्ठ शिक्षा से ही बनेगा श्रेष्ठ समाज

मूल्यनिष्ठ शिक्षा श्रेष्ठ समाज और सुखी परिवार की धुरी है। शिक्षा ही वह स्तर है, जिससे व्यक्ति के व्यक्तित्व और व्यवहार की कड़ी के रूप में सामने आता है। मुझे याद है कि परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को मूल्यनिष्ठता की शिक्षा बड़ी ही बारिकी से जीवन के प्रत्येक पहलू को अनुशासित करने के लिए दी। जिससे कर्मेन्द्रियां है सही रूप में कार्य कर सके। जब व्यक्ति अपने भौतिक शरीर को सही दिशा में लगाएगा तभी हमारे कर्म सर्वश्रेष्ठ कर्म होंगे। परमात्मा की शिक्षा हमेशा मनुष्य को पुरूषोत्तम बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। आज स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा से निश्चित तौर पर भारत के युवा प्रतिभावान बनकर पूरी दुनिया में परचम फहरा रहे हैं। परन्तु इन युवाओं से मूल्यों और संस्कारों की अनुपस्थिति चिंताजनक है।

हर माता-पिता तो यही चाहते हैं कि हमारी संतान और परिवार के लोग संस्कारित रहे। परन्तु इसके लिए प्रयास तो हर एक को स्वयं ही करना होगा। अब तो पहले जैसे न शिक्षक रहे और न ही विद्यार्थी। कई बार तो स्कूलों में छोटे बच्चे ही ऐसी घटनाओं को अंजाम दे देते हैं, जो हैरान कर देने वाली होती है। आज की स्थिति किसी भी सूरत में मनुष्य के हित में नहीं दिखती है। परमात्मा हमेशा मानव कल्याण के लिए कोई न कोई योजनाएं बनाता है ताकि मनुष्य अपने सद्मार्ग से भटक न सकें। क्योंकि जब तक मूल्य एवं मानवता है तभी यह समाज सही तरीके से चल पाएगा। जहां सद्मार्ग का भटकाव आया तो जाहिर है वह समाज श्रेष्ठ समाज कभी कहलाने योग्य होगा ही नहीं। जब पूरी दुनिया में इस तरह की घड़ियां आ जाती है, मानवता समाप्त हो जाती है, मानवीय मूल्य लुप्त हो जाते हैं मनुष्य की दुनिया होते भी दानवों की तरह हो जाती है। हिंसा, ज्यादती, घूसखोरी, अपनों का खून, आतंकवाद, स्वार्थ, सुरसा के समान पूरी दुनिया को निगल रहा है।

जब ऐसी स्थितियां विकराल रूप धारण कर लेती है तो परमात्मा स्वयं इस सृष्टि पर अवतरित होकर मनुष्य को देव तुल्य संस्कारित बनाने की शिक्षा देते हैं। क्योंकि आत्मा इतनी कमजोर हो चुकी है कि जब तक उसका मूल्यों के स्रोत से सम्बन्ध नहीं होगा, तब तक वह शक्तिशाली और मूल्यवान नहीं बन पाएगी। इसलिए वर्तमान समय ब्रह्माकुमारीज़ आध्यात्मिक संस्थान होने के बावजूद ईश्वरीय विश्व विद्यालय के रूप में विख्यात है। इस विश्व विद्यालय में मूल्यों और संस्कारों की शिक्षा दी जाती है। इसलिए अब देश व विदेश के कई विश्वविद्यालयों ने परमात्मा की इस शिक्षा को एक पाठयक्रम के रूप में लागू किया है।

मूल्यों से संवारे जीवन की बगिया

मेरी कलम से

सुरेश वर्मा

लेखक: जामिया मिलिया इस्लामिया, विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में सहायक प्रोफेसर हैं।
Email: askverma@gmail.com

आज हम आपको एक ऐसे विश्व विद्यालय के बारे में बता रहे हैं जो आज विश्व के सामने एक स्तम्भ हैं। जहां से आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण कर अनेकों लोगों ने अपने जीवन को उज्ज्वल बनाया है। यहां दिए जा रहे ज्ञान से मानव मात्र को सिर्फ शांति ही नहीं मिलती हैं वरन् उनका सम्बन्ध अविनाशी सत्ता से भी जुड़ जाता है।

आज देश तथा विदेश में अनेकों विश्वविद्यालय हैं लेकिन किसी भी विश्वविद्यालय में चरित्र निर्माण की शिक्षा नहीं दी जाती है। जिससे व्यक्ति के अंदर ज्ञान तो आ जाता है लेकिन उसका चरित्र खोखला ही रहता है। जब व्यक्ति का चरित्र ऊंचा होता है तो उसकी प्रतिभा निखरने लगती है। इसलिए मनुष्य को सर्वप्रथम चरित्र निर्माण की ही शिक्षा दी जानी चाहिए। जिससे व्यक्ति का नैतिक और चारित्रिक पतन न हो।

आज बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल करने के पश्चात् भी व्यक्ति झूठ, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार जैसे कार्यों में संलग्न होकर अपना विवेक खो देता है और नैतिक पतन के कगार पर पहुंच जाता है। तो आज ये शिक्षा किस काम की है जो व्यक्ति को देश, समाज और परिवार के सामने नीचा दिखा दे। क्या हम सभी ने शिक्षा ग्रहण करते समय कभी ये सोचा था...? नहीं। आज हमारी ये स्थिति कैसे हो गई। क्या कभी आपने इस पर विचार किया है।

आज हम आपको एक ऐसे विश्व विद्यालय के बारे में बता रहे हैं जो आज विश्व के सामने एक स्तम्भ है। जहां से आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा ग्रहण कर अनेकों लोगों ने अपने जीवन को उज्ज्वल बनाया है। यहां दिए जा रहे ज्ञान से मानव मात्र को सिर्फ शांति ही नहीं मिलती है वरन् उनका सम्बन्ध अविनाशी सत्ता से भी जुड़ जाता है। आज देश के विश्वविद्यालयों के समाने सबसे बड़ी समस्या यही है कि कैसे श्रेष्ठ मानव का निर्माण किया जाए? कैसे उसमें श्रेष्ठ संस्कारों को भरा जाए? इसका सिर्फ एक ही समाधान है, और वह है जीवन-मूल्यों की शिक्षा। आज मानव को जो शिक्षा दी जाती है उससे उसका सिर्फ मानसिक विकास ही हो पाता है, लेकिन उसका दूसरा पहलू अछूता ही रह जाता है। इसका विकास हम सिर्फ मूल्यों की शिक्षा देकर ही कर सकते हैं। तभी हम अपना जीवन मूल्यनिष्ठ बना पाएंगे। इस विश्व विद्यालय द्वारा दी जा रही शिक्षा को भारत के अनेक विश्वविद्यालयों ने अपने यहां मान्यता प्रदान की है। जो कि एक बदलते हुए इतिहास की तरफ संकेत है। आज व्यक्ति को मूल्यनिष्ठ बनाने की आवश्यकता है जिसे हम मूल्यों की शिक्षा देकर ही कर सकते हैं। तभी व्यक्ति का सर्वांगीण विकास हो पाएगा।

बचपन में अक्सर हम बड़ों के मुख से यह सुना करते थे कि धन की तृष्णा नहीं रखनी चाहिए, माया के बंधनों से मुक्त रहना चाहिए। परंतु आज हममें से कितने हैं जो सच्चे दिल से तृष्णाओं से स्वयं को बचा पाते हैं? हम सभी जानते हैं कि तृष्णाएं मानव मन में समुद्र की लहरों की भांति उभरती रहती है और आकर्षित भी करती है, परंतु यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपनी भावनाओं को क्या दिशा दे पाते हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में आयोजित बाल व्यक्तित्व विकास शिविर में उपस्थित बच्चे।

संपत्ति दो प्रकार की होती है - लौकिक एवं अलौकिक। लौकिक से अभिप्राय जमीन, जायजाद, ऐशो-आराम के साधन और इसके विपरीत अलौकिक से हमारा तात्पर्य है - सात्विक गुण जैसे शांति, धैर्य, मधुरता, संतोष इत्यादि। यद्यपि हमारा मन लौकिक तृष्णाओं के पीछे भागता रहता है, परंतु सच्ची शांति तभी मिल पाती है जब हमारा मन संतोषमय हो जाता है। कहा भी गया है-

गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन खान।
जब आते संतोष धन, सब धन धूर समान।

संतोष का यह धन जो मैंने ब्रह्माकुमारीज़ संस्था में देखा है, वह काबिले तारीफ है। सुमति का धन या अलौकिक धन विकसित करने की इनकी कोशिश मन में धैर्य के साथ विवेक को भी जन्म देती है। सुमति होने पर चाहे हमारे पास लौकिक धन न भी हो, हम प्रसन्न रहते हैं, मन सदैव प्रफुल्लित रहता है, ईर्ष्या, लोभ, क्रोध आदि विकार हमसे दूर भागते हैं। सुमति के आने से ही मानव मन में अनेक प्रेरणाएं उदित होने लगती है और हम अपने स्वार्थ का त्याग कर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों पर भी विजय प्राप्त कर लेते हैं।

सुमति हमारे मन में संपत्ति का मोह छुड़ाती है, जिससे संपत्ति के प्रति हमारा दृष्टिकोण निर्मल होने पर मन में उसका संचय न करने की भावना को बल मिलता है। इसके विपरीत इसके अभाव में भ्रष्टाचार, लोभ, पर पीड़ा आदि कुरीतियां प्रबल होकर समाज को पद भ्रष्ट करने की दिशा देती है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सुमति प्रेरित संतोष धन एक ऐसा सात्विक भाव है जो मन रूपी दर्पण की गंदगी को साफ कर देता है। मन की लहरों की गति को थाम कर, जिस प्रकार तालाब के पानी में हम अक्स को साफ देख पाते हैं, वैसे ही जीवन में स्वदर्शन के लिए संतोष होने पर ही हमारा मार्ग हमें स्पष्ट दिखने लगता है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा इस धन का संचय करने का प्रयास सराहनीय है।

अगर हमें अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना है तो हमें मूल्य शिक्षा को अपने जीवन में उतारना ही होगा और इसका प्रारंभ यूं तो हम किसी भी उम्र से कर सकते हैं लेकिन बचपन से शुरुआत करना ज्यादा श्रेयस्कर होता है। इसलिए प्राचीन इतिहास में शिक्षा के लिए गुरुकूल पद्धति अपनायी जाती थी।

बाबा ने दी मूल्यों की शिक्षा

जब हम पहले-पहले बाबा के पास आए थे तो बाबा ने मुझे बताया था कि हम सभी आत्मा हैं। इस नाते से हम सभी आपस में भाई-भाई हैं। तो हमें आपस में कितना प्यार से रहना चाहिए, ये बाबा ने हमें बताया था। बाबा ने हमें सर्वप्रथम पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। जिससे व्यक्ति घर और समाज में एकता से रहना सीखता है और एक-दूसरे से स्नेह से बंधा होता है। इस मूल्य से भरपूर व्यक्ति में विश्वास, ईमानदारी, नम्रता, दूसरों को सम्मान देना, सादगी आदि मूल्य स्वत: ही समाए रहते हैं। उसे इसके लिए कहीं से शिक्षा लेने की जरूरत नहीं होती है। आज लोग अपनी दैवी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं और विदेशों की संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं। इससे भी हमारे जीवन में मूल्यों का पतन हुआ है। इसलिए परमात्मा पुन: इस सृष्टि पर अवतरित होकर मानवमात्र को मूल्यों की शिक्षा देकर पुन: दैवी दुनिया की स्थापना कर रहे हैं। जीवन-मूल्यों से संपन्न व्यक्ति ही देश का एक अच्छा नागरिक बन सकता है और अपने कर्मों के प्रति सजग रहता है।

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राजस्थान

सफल जीवन का आधार युवा तेजी से बड़ी संख्या में अपना रहे मूल्य शिक्षा

..और आ जाती जीने की कला

कहा जाता है कि घड़ा जब कच्चा होता है तो हम उसे जो आकार देना चाहे दे सकते हैं उसी तरह विद्यार्थी जीवन होता है। विद्यार्थियों को बचपन से ही नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाए तो वह परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए सही मायने में कुछ दे सकेंगे।

नैतिक मूल्य एवं आध्यात्मिकता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा के विद्यार्थी प्रमाण-पत्र दिखाते हुए।

आज विश्वभर में बच्चों की उन्नति की ओर सरकार तथा संस्थाओं का ध्यान गया है। नैतिकता ही हर एक राष्ट्र की सच्ची निधि है और बच्चों में नैतिकता का विकास करने से ही नए समाज का अभ्युदय होता है।

नैतिकता ही शांति की जननी है। देश में नैतिकता का वातावरण बनने से ही सच्ची शांति होगी और समाज का स्थायी कल्याण होगा। नैतिकता से ही अपनी इच्छाओं से चलना, अपराध अत्याचार के रोकथाम की विधि है।

विद्यार्थियों पर टिकी सभी की आशाएं

मात-पिता की सदैव शुभ कामना बनी रहती है कि बच्चे अच्छे बनें। अध्यापक वर्ग भी यही सोचते व शुभ अभिलाषा रखते हैं कि बच्चे अच्छे बनें, वही उनकी पाठशालाओं के मोर-पंख होते हैं। देशवासी भी इच्छा रखते हैं कि बालक-बालिकाएं अच्छे हों। क्यों? क्योंकि सभ्यता और संस्कृति को चिरंजीवी बनाए रखने के लिए सभी की आशाएं उन्हीं पर टिकी होती है। बच्चे नए युग की नई फुलवाड़ी के ताजा फूल होते हैं। वे ही देश की नव मुस्कान, नई किरणें और नवचेतना लिए हुए नए समाज के अग्रदूत होते हैं। नैतिक शिक्षा देने का अभिप्राय यही है कि जिससे उनका चारित्रिक विकास हो।

एक बार स्कूलों में सर्वेक्षण किया गया तो 96 प्रतिशत विद्यार्थियों का यह विचार रहा कि स्कूल में नैतिक शिक्षा का प्रबंध किया जाए। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस प्रकार की शिक्षा को प्रारंभ से ही अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता आ रहा है।

एक अनोखा विश्व विद्यालय

ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसा अनोखा विश्व विद्यालय है जहां पर सभी धर्मों एवं जाति के लोगों को नि:शुल्क नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। मानव जीवन में सर्वश्रेष्ठ समय विद्यार्थी जीवन का है। यही समय है पढ़ने-लिखने, खेलने-कूदने, मौज मनाने का और अपने भविष्य जीवन को उज्ज्वल बनाने का। अर्थात् एक ही समय में जीवन बनाना भी है।

विद्यार्थी जीवन अनमोल

विद्यार्थी जीवन अनमोल है क्योंकि नैतिक मूल्यों को जीवन में धारण करने की यही उम्र है। यही जीवन का वह मोड़ है, जब ये जानना जरूरी हो जाता है कि हमारे अंदर क्या-क्या गुण और शक्तियां हैं? और क्या इन गुणों एवं शक्तियों के द्वारा आने वाले कल का सामना कर सकेंगे? विद्यार्थी ही समस्त संसार के लिए ऊर्जा के स्रोत हैं और संपत्ति भी हैं अत: इसे पहचानें।

राष्ट्र की महानता नैतिक मूल्यों से

नैतिक मूल्य, भौतिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य और मानवीय मूल्य। राष्ट्र की महानता वहां के लोगों की एकता एवं नैतिक मूल्यों से है। जैसे भाई-बहन के संबंध में पवित्रता व शुद्ध प्रेम मूल्य है। ऐसे मूल्यों को ही नैतिक मूल्य कहा जाता है अर्थात् आंतरिक सुंदरता ही नैतिक मूल्य हैं। लेकिन आज का मानव संसार में भौतिक वस्तु व पदार्थों को ही अधिक महत्व देते हैं, क्योंकि जीवन में शारीरिक सुख-सुविधा मिलती है अर्थात् बाह्यता भौतिक मूल्य है, क्षणभंगुर है। गांधीजी के जीवन में नैतिक मूल्य व्यवहार में स्पष्ट देखने में आते थे। उनके जीवन में भौतिकता का महत्व कम था, भौतिकता का महत्व आवश्यकता पर निर्भर है।

भौतिक मूल्यों को महत्व देने से बढ़ी समस्याएं

जब मूल्यों की चर्चा होती है तो मूल्य का महत्व अपने जीवन में कितना दिया है यह हर एक अपने आपको चेक करे और यह देखे कि हम कितने संतुष्ट हैं। जब हम केवल भौतिकता को ही महत्व देते हैं तो पैसा ही सब कुछ हो जाता है और इसी कारण आज संसार में अनेक प्रकार की समस्यायें पैदा होती हैं और फलस्वरूप दु:ख एवं अशांति, तनाव का अनुभव करते हैं, इसलिए सरकार ने भी शिक्षा की नई नीति में नैतिक मूल्यों को स्थान देने की घोषणा की है। इससे स्पष्ट है कि इसकी आवश्यकता महसूस होती है। ध्यान से देखा जाए तो अत्याचार, भ्रष्टाचार, कुविचारों की अभिव्यक्ति है। सदाचार, सद्व्यवहार इत्यादि की नींव भी मनुष्य के नैतिक विचारों से बनी है। किसी ने ठीक ही कहा है कि मनुष्य के जैसे विचार होते हैं वैसा ही वह बन जाता है। मनुष्य की मान्यता, उसका विश्वास, उसका दृष्टिकोण, उसकी विचारधारा ही उसे हर एक कर्मों की ओर प्रेरित करती है और उनको देखकर अन्य भी प्रेरित होते हैं। मुख्य मूल्य, विचारों की स्पष्टता, दूरदर्शिता, दृढ़ता, आत्मविश्वास, अथक परिश्रम है तो ऐसे नैतिक मूल्यों की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों में मूल्यों का संचय जरूरी

वर्तमान विद्यार्थी जीवन पर ही भविष्य निर्भर है। भविष्य जीवन की नींव विद्यार्थी ही डालते हैं। जैसे इमारत बनाते समय उसकी नींव मजबूत हो इसका खास ध्यान रखा जाता है, क्योंकि जितनी नींव मजबूत होगी उतनी ही इमारत की ऊंचाई व भव्यता का आधार बनेगी। ठीक इसी तरह से यदि विद्यार्थी जीवन की ऊंचाई को प्राप्त करना चाहते हैं तो विद्यार्थी जीवन में ही नैतिक मूल्यों का सिंचन करना होगा।

महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद वह महापुरुष है जिन्होंने नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में अपनाया और आज विश्व के सामने उदाहरणमूर्त बन गए। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा का पाठ पूरी दुनिया को पढ़ाया। आज जो विद्यार्थी हैं कल वहीं कोई नेता, अभिनेता, खिलाड़ी, डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक, जज, इंजीनियर बनेंगे और राष्ट्र की बागडोर आपके हाथें में होगी और संसार के लोग भी आपको देखेंगे। ऐसा आपका भी भविष्य हो सकता है। नैतिक मूल्यों का अर्थ है नीति के अनुरूप व नीतियुक्त, सद्गुण व्यावहारिक जीवन। हमारे संबंध-सम्पर्क में आने वालों को सुखदाई अनुभव हो। सबके लिए भलाई की भावना हो। दूसरों की भलाई का भी विचार करना, स्वयं भी शांति में रहना और दूसरों को भी सुख-शांति से जीने में सहयोग देना ही नैतिक मूल्य हैं। यदि हम जीवन की शिक्षा में मूल्यों को शामिल कर दे तो यह जीवन सुगंधित बन जाएगा और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

प्रेरक विचार

असली शिक्षा वही है जो मानव को उसके भीतर ईश्वरीय शक्ति का अनुभव करा दें। - **डॉ. राधाकृष्णन**

संसार में जितने भी प्रकार की प्राप्तियां हैं उनमें शिक्षा सबसे बढ़कर है। - **निराला**

शिक्षा वही है जिसके द्वारा साहस का विकास हो, गुणों में वृद्धि हो और ऊंचे उद्देश्यों के प्रति लगन जागे। - **महात्मा गांधी**

शिक्षा का उद्देश्य मन को संयम में लाना, सजाना नहीं, उसको अपनी शक्तियों का उपयोग करना सिखाना, दूसरों के विचारों को इकट्ठा करना नहीं। - **ड्रायन एडवर्ड्स**

शिक्षा का फल उदारता, त्याग सद्इच्छा, सहानुभूति, न्यायपरता और दयाशीलता है। - **प्रेमचंद**

शिक्षा का मतलब है, व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास। - **जैनेन्द्र**

शिक्षा का ध्येय चरित्र निर्माण हो, कोरी शिक्षा से कोई लाभ नहीं। - **वर्क**

आध्यात्मिक चेतना का आधार राजयोग

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लोगों की अपूर्व सेवा की जा रही है। यहां सभी वर्ग के लोगों में नैतिक और आध्यात्मिकता का अनुभव कराया जा रहा है। आध्यात्मिक चेतना का आधार राजयोग है। जो किसी भी शैक्षणिक संस्थान में नहीं पढ़ाया जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा की जा रही नि:स्वार्थ सेवा कहीं भी देखने को नहीं मिलती है। हमने अपने जीवन में राजनीति और आध्यात्मिकता को आधार बनाकर कार्य किया। ब्रह्माकुमारीज़ में आने से हमारे जीवन में बहुत परिवर्तन आया है। परमात्मा की प्राप्ति का सहज रास्ता ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बताया जाता है। यहां जो अध्यात्म की शिक्षा दी जाती है, उससे हमारे संस्कारों में परिवर्तन आता है जिससे हमारा जीवन श्रेष्ठ बन जाता है। समाज के लिए आज यह बेहद जरूरी है।

रामचंद्र पूर्वे, पूर्व शिक्षा मंत्री, बिहार

शिक्षा बनाती हर क्षेत्र में दक्ष

शिक्षा एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य है व्यक्तित्व का समग्र विकास करना। व्यक्तित्व से तात्पर्य उन सभी आदतों और मानसिक शक्तियों से है जो व्यक्ति को कर्म क्षेत्र में दक्ष और सफल बनाती है। व्यक्तित्व विकास के निम्न मानक है।

बुद्धि गुणांक

शिक्षा द्वारा अर्जित ज्ञान के आधार पर व्यक्ति में होने वाले बौद्धिक विकास को यह बुद्धि गुणांक दर्शाता है जिससे किसी व्यक्ति की परिस्थिति को समझने और उसके अनुसार तुरंत प्रत्युत्तर देने की शक्ति का पता चलता है। परंतु वर्तमान समय में इसे अच्छा नहीं माना जाता है। क्योंकि अनेक तीव्र बुद्धि के व्यक्ति अपराध तथा अनैतिक कर्म करते हुए पाए जाते हैं जो शिक्षा की मूल भावना के विपरीत है। शिक्षा का उद्देश्य श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करना है। आइंस्टीन इस शताब्दी का सबसे तीव्र बुद्धि का वैज्ञानिक माना जाता है परंतु वह महाविनाशकारी परमाणु बम के अविष्कार के लिए उत्तरदायी भी है।

भावनात्मक गुणांक

शिक्षाविदों ने इसके बाद भावनात्मक गुणांक को व्यक्तित्व विकास का मानक स्वीकार किया। क्योंकि अच्छी भावनाओं से प्रेरित व्यक्ति स्वयं अच्छे कर्म करते है तथा दूसरों को भी अच्छे कर्म की ओर प्रेरित करते है। परंतु भावनाओं स्थायी नहीं होती है। इनमें उतार-चढ़ाव आता है। प्राय: देखा जाता है कि कुछ व्यक्ति आसानी से लोगों को अपनी भावना के प्रभाव में लेकर उनका भावनात्मक शोषण करते है।

नैतिक गुणांक

इसके बाद शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने नैतिक गुणांक को व्यक्तित्व का मानक बताया परंतु नैतिकता समय , स्थान, समाज और परिस्थिति के अनुसार बदलती है। जो नैतिकबाद किसी समाज में अच्छी मानी जाती है। वहीं बात दूसरे समाज में अच्छी नहीं मानी जा सकती है। कई बार देखा गया है कई लोग अपने देश या समाज के हित में ऐसे कार्य करते हैं जो मानवता के विरुद्ध होते है। इसलिए नैतिक गुणांक भी संपूर्ण व्यक्तित्व के श्रेष्ठता की कसौटी नहीं माना जा सकता है।

आध्यात्मिक गुणांक

आधुनिक मनोवैज्ञानिक अवधारणा के अनुसार यह व्यक्तित्व के श्रेष्ठता का सर्वोत्तम मानक है। इक्कीसवीं सदी के प्रांरभ में ईवन मार्शल और दनाह जोहर नामक मनोवैज्ञानिकों ने इस गुणांक की अवधारणा को विकसित किया।

आध्यात्मिक गुणांक के अनुसार आत्मानुभूति द्वारा अदृश्य सत्ता की अनुभूति करने से मनुष्य सर्व प्रकार के मनोविकारों से मुक्त हो जाता है। उसे कर्मों की गहन गति का ज्ञान हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से व्यक्ति के अंदर कर्मकुशलता आती है जिससे वह सदा श्रेष्ठ कर्म करता है। पश्चिमी देशों में नौकरियां प्रदान करते समय आध्यात्मिक गुणांक को महत्व दिया जाने लगा है। आध्यात्मिक गुणांक होने पर व्यक्तित्व विकास के अन्य सभी गुणांक स्वत: आ जाते है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रदान किए जाने वाले ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग के नियमित अभ्यास से मनुष्य में आध्यात्मिक गुणांक का विकास होता है।

पाठक पीठ

बहुत ही रोचक लगा अंक

सुलझाइए खुद की पहेली का अंक बहुत ही रोचक लगा। आज मानव अपने जीवन में कितनी पहेलियों को हल करता है लेकिन वह स्वयं की पहेली का समाधान नहीं जानता है। वास्तव में यह अंक मुझे बहुत ही अनमोल लगा, क्योंकि इसमें सारे शास्त्रों का ज्ञान समाया हुआ है। वर्तमान समय देश को और समाज को इस तरह के न्यूज पेपर के प्रकाशन की सख्त आवश्यकता है।

विनोद श्रीवास्तव, रतलाम, मप्र

विश्व के सामने मिसाल

'विश्व बंधुत्व की मसीहा' अंक बहुत ही अच्छा लगा। यह अंक पढ़कर मुझे मालूम हुआ कि कैसे दादी प्रकाशमणि ने इस संस्था की बागडोर संभाली और अपनी प्रशासन कुशलता से आगे बढ़ाया। विश्व में महिलाओं द्वारा संचालित यह संगठन विश्व के सामने एक मिसाल है।

सोहन भोजवानी, अंबिकापुर, छत्तीसगढ़

बहुत ही आकर्षक है ये अखबार

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रकाशित यह अखबार बहुत ही आकर्षक एवं सरल भाषा में है जो हम सभी को बहुत ही आकर्षित करता है। इसे हमारे परिवार के सभी लोगों ने बहुत ही रूचि से पढ़ा। इसमें प्रकाशित सामग्री वर्तमान समय की परिस्थितियों से संबंधित है। मेरी भगवान से और संस्था के भाई-बहनों से यही प्रार्थना है कि इसे नियमित रूप से प्रकाशित करें। नैतिक मूल्यों के पतन के गुजर रहे समाज को यह अखबार संजीवनी बूटी का काम करेगा।

अजीत कुमार, नई दिल्ली।

....दूर हो गई भ्रांति

आज तक मैं उलझन में थी कि भगवान किसे कहा जाए, शिव आमंत्रण पढ़ने से इस संबंध में हमारी भ्रांति दूर हो गई। इसके लिए मैं ब्रह्माकुमारीज़ संस्था को दिल से धन्यवाद देती हूं।

रजनी कुमारी, सिरसा

हमने अपने जीवन में अनेक शास्त्र पढ़े हैं, लेकिन एक ही पेपर में इतनी ज्ञान की बातें मुझे पहली बार मिली है। इसमें ज्ञान की व्याख्या सरल शब्दों में इतनी गहराई से की जाती है कि हर एक को समझ में आ जाती है। सचमुच में यह संस्था धन्यवाद की पात्र है।

जितेन्द्रसिंह राजपूत, बीना, मप्र

आजकल तो लोग एक पेपर को भी पूरी तरह से पढ़ नहीं पाते हैं लेकिन जब से हमारे घर में शिव आमंत्रण पेपर आया है। इसे सभी लोगों ने कम से कम आठ बार पूरी तरह से पढ़ा है और समझा है। यह देखकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। सचमुच में यह पेपर अपने नाम को चरितार्थ कर रहा है। संपादकीय टीम को मेरा कोटि-कोटि नमन।

मनोज भारती, पंजाब

जैसी अवस्था वैसी व्यवस्था लेख पढ़कर मुझे पता चला कि ब्रह्माकुमारीज़ समाजिक सेवा का कार्य भी कर रही है।

गुंजन कुमार, कोलकाता

प्रतिक्रिया एवं सुझाव

यह अंक आपको कैसा लगा, कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव निम्न पते पर भेंजे। प्रकाशन योग्य होने पर इसे प्रकाशित किया जायेगा।

पता: ब्रह्माकुमारीज़, मीडिया विंग एण्ड पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबूरोड जिला - सिरोही, राजस्थान, पिन कोड: 307501 (फोन: 02974-228230)

Email- shivamantran.media@gmail.com

विश्वविद्यालयों में होगी मूल्यों की पढ़ाई

भौतिकवादी एवं रूढ़िवादी समय में मूल्यनिष्ठता को पूर्णतया से जीवन में उतारना कठिन जरूर था परन्तु असम्भव नहीं। जब इसका परिणाम लोगों के सामने सार्वजनिक हुआ तो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों तथा सरकारों ने इसे एक पाठ्यक्रम के रूप में आवश्यकता जतायी। आज यह भारत सहित पूरे विश्व के कई शिक्षण संस्थानों में एक पाठ्यक्रम का रूप ले चुका है मूल्यनिष्ठ शिक्षा। इस पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले हर उम्र के हैं हजारों विद्यार्थी...

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना सन् 1937 में ही हो गयी थी। परमात्मा प्रदत्त यह ईश्वरीय ज्ञान अर्थात मूल्यनिष्ठ शिक्षा का शुभारम्भ धीरे-धीरे लोगों के बीच अपनी अलग पहचान बनाने लगा।

उस दौर में लोगों को यह यकीन ही नहीं होता था कि भौतिकवादी युग में मूल्यनिष्ठ शिक्षा को अपने जीवन का अंग बनाया जा सकता है। परन्तु परमात्मा की डायरेक्ट शिक्षा एवं आध्यात्मिक शक्ति से जो लोग जुड़े, उनके अन्दर मूल्यों का समावेश होता गया। लोगों को साफ तौर पर दिखने लगा कि ये लोग इस दुनिया में भी असाधारण हैं। परन्तु इस कार्य का वृहद रूप का नींव सन् 1976 पड़ी।

पहले यह शिक्षा बच्चों के कैम्प के रूप में प्रारम्भ की गयी। कई वर्षों तक यह सिलसिला यूं ही चलता रहा। बड़ी संख्या में नौनिहाल इस अभियान का हिस्सा बने और वे आज बड़ी संख्या में मूल्यों से ओत-प्रोत होकर प्रेरणास्रोत बन इस मुहिम का हिस्सा बने।

शिक्षा प्रभाग का गठन

चूंकि समय के साथ सब कुछ व्यावसायिकरण का रूप लेता गया। शिक्षा ने भी करवट बदली और पूर्ण रूप से भौतिक शिक्षा में तब्दील हो गयी। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने मूल्यनिष्ठ शिक्षा के अभियान को गति देने के लिए सन् 1982 में राजयोग शिक्षा एवं शोध प्रतिष्ठान के तहत शिक्षा प्रभाग का गठन किया गया।

यह इसलिए भी जरूरी था कि यह प्रभाग विशेषकर समाज में शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुए लोगों में परमात्मा की शिक्षा अर्थात् मूल्यनिष्ठ शिक्षा के रूप में प्रतिस्थापित किया जा सके। इसके बाद सम्मेलनों, संगोष्ठियों और अनेक अभियानों से गुजरकर अब यह एक पाठ्यक्रम का रूप ले चुका है।

हजारों लोग हुए इस मुहिम में शामिल

इन अभियानों के दौरान अब तक हजारों शिक्षक, प्रोफेसर, विश्वविद्यालयों के कुलपति, उपकुलपति, निदेशक, व्याख्याता समेत हजारों की संख्या में लोगों ने इस मूल्यनिष्ठ शिक्षा को अपने जीवन का अंग बनाया।

वर्तमान समय में यह शिक्षा कई विश्वविद्यालयों में पूर्ण रूप से लागू हो चुकी है। जिसके सुखद एवं बेहतर परिणाम सामने आने लगे हैं। अब तो खुलकर शिक्षाविदों ने इसे प्रत्येक विश्वविद्यालयों, स्कूलों एवं कॉलेजों में भी अपनाने के लिए प्रयासरत है। ताकि मूल्य विहिन होते युवा एवं समाज को इस भारी नैतिक गिरावट से रोका जा सके। परमात्मा की यह मुहिम तेजी से विस्तार तो पा ही रही है। अब तो केन्द्र सरकार ने सभी केन्द्रीय विद्यालयों में भी इसे नियमित रूप से पढ़ाये जाने की सहमति दी है। ताकि आने वाले कल के बच्चों को एक नया भविष्य, आदर्श और उच्च संस्कार दिया जा सके।

ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाए जा रहे अन्य कोर्सेज

- सकारात्मक चिंतन एवं मानसिक तनाव से मुक्ति
- राजयोग मेडीटेशन
- मानसिक शांति
- जीवन जीने की कला
- सफलता के तीन सूत्र
- स्वप्रबंधन नेतृत्व

नुकसान

- जीवन की वास्तविकता के विपरीत परिणाम।
- जीवन की प्रगति में रूकावट एवं संघर्ष का अनुभव।
- लघुताग्रंथी अथवा गुरुताग्रंथी।
- जीवन में नीरसता, उदासीनता, हताशा।
- स्वास्थ्य को नुकसान।
- कुसंग में सहज फंस जाते हैं और व्यसनी बन सकते हैं।
- जीवघात-आत्महत्या करते हैं।
- हत्यायें होती हैं।
- भ्रष्टाचार, अत्याचार पनपता है।
- संस्कार बिगड़ते हैं।

मूल्यों की धारणा से लाभ

- सांसारिक पदार्थों की मृगतृष्णा से बचकर रहते हैं।
- सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं।
- सफलता सहज ही प्राप्त होती है।
- निर्भयता-निडरता आती है।
- संबंधों में सुख का अनुभव होता है।
- सदा संतुष्ट रहता है।
- मानसिक तनाव से मुक्त ।
- समस्याओं को सहज पार कर सकते हैं।
- निश्चिंत रह सकते हैं।

इन विश्वविद्यालयों ने अपनाई मूल्य शिक्षा

इस मूल्यनिष्ठ शिक्षा पाठ्यक्रम को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने अपने यहां लागू करने की सहमति प्रदान की है जिसमें निम्नलिखित पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है:

अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडू

संचालित पाठ्यक्रम

- मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा।
- मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में एक वर्षीय डिप्लोमा।
- स्व-प्रबंधन एवं आपदा प्रबंधन एमबीए में दो वर्षीय पाठ्यक्रम।
- मूल्य शिक्षा एवं अध्यात्म में एमएससी दो वर्षीय पाठ्यक्रम।
- स्वास्थ्य सुरक्षा में एक वर्षीय पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा।

अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडू में 2009-10 से ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वावधान में कई पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। जिसमें प्रवेश लेकर आप अपना भविष्य संवार सकते हैं और अपने जीवन को मूल्यनिष्ठ बना सकते हैं।

यशवंतराव खुला विश्वविद्यालय

संचालित पाठ्यक्रम

- मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
- मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
- मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में बीए पाठ्यक्रम।

यशवंतराव खुला विश्वविद्यालय, नासिक, महाराष्ट्र में यह पाठ्यक्रम २०१२-१३ से ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में संचालित किए जा रहे हैं।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय

संचालित पाठ्यक्रम

- मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
- मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एम.एस.सी. पाठ्यक्रम।
- स्व-प्रबंधन एवं आपात प्रबंधन (क्राइसिस मैनेजमेंट) में एमबीए पाठ्यक्रम।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय डिब्रूगढ़, असाम में यह पाठ्यक्रम २०१३ से ब्रहमाकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है।

आरकेडीएफ विश्वविद्यालय, भोपाल

रामकृष्ण धर्मार्थ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश में २०१३ से ब्रहमाकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में निम्नलिखित पाठ्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

कोटा खुला विश्वविद्यालय

कोटा खुला विश्वविद्यालय में भी इस पाठ्यक्रम को लागू करने पर सहमति बनी है। इसके अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालयों में इस पाठ्यक्रम को लागू करने पर विचार किया जा रहा है।

आरकेडीएफ विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रम

- स्व- प्रबंधन एवं आपात प्रबंधन (क्राइसिस मैनेजमेंट) में एम.बी.ए. पाठ्यक्रम।
- मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा पाठ्यक्रम।
- मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा में एम.एस.सी पाठ्यक्रम।

परमात्मा दे रहें शिक्षा

हम श्रेष्ठ संस्कारों से ही अपना जीवन मूल्यवान बना सकते हैं। इसलिए परमात्मा हमें श्रेष्ठ संस्कारों को धारण करने की शिक्षा देते हैं। ज्ञान दान करना सर्वश्रेष्ठ दान माना जाता है क्योंकि हम ज्ञान द्वारा ही सभ्य मानव बना सकते हैं। आज की शिक्षा से व्यक्ति के अंदर संस्कार जागृत नहीं होते हैं क्योंकि उस शिक्षा में मूल्यों का अभाव होता है और शिक्षा देने वाले भी मूल्यरहित होते हैं जिससे उसका प्रभाव व्यक्ति पर नहीं पड़ता है। इसलिए हमें सबसे पहले स्वयं में मूल्यों को धारण करने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षा वही सार्थक है जो मनुष्य को शिक्षित करें ही इसके साथ ही उसे संस्कारवान भी बनाए। व्यक्ति की पहचान उसके व्यवहार से और मूल्यों से होती है उसके नाम से नहीं। इसलिए आज की शिक्षा को मूल्य परक बनाएं जाने की आवश्यकता है।

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

इस पाठ्यक्रम से युवाओं को नई दिशा मिलेगी

संस्कार मूल्य परक होने चाहिए उसके अभाव में बहुत नुकसान हो रहा है। लोग भौतिकवादी होते जा रहे हैं। आज जो शिक्षा दी जा रही है, उसमें मूल्यों का अभाव है। जिसके कारण जीवन से मूल्य लोप होते जा रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की शिक्षा से निश्चित तौर पर सर्वांगीण विकास होगा। इसको देखते हुए कोटा विश्वविद्यालय और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दोनों ने मिलकर पाठ्यक्रम चलाने की पहल की है। इससे निश्चित तौर युवाओं को एक नई दिशा मिलेगी और संस्कारित होंगे। आज बहुत जरूरी है कि ऐसी शिक्षाओं को बढ़ावा दिया जाए।

प्रो. विनय कुमार पाठक, उपकुलपति, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

शिक्षा हो वैल्यू आधारित

मानवीय सम्बन्धों को बनाने में वर्तमान शिक्षा आज असफल हो चुकी है, क्योंकि इसमें कोई आध्यात्मिक शिक्षा नहीं है। आज शिक्षक भी वैसे ही कार्य करते हैं जिसमें उनका ग्रोथ हो। आज जितने भी शिक्षण संस्थान हैं वे अध्यात्म से दूर हैं जिससे एजुकेशन बिजनेस बन गया है। जो कहीं नहीं पढ़ाया जाता है वह ब्रह्माकुमारीज़ में पढ़ाया जाता है। जब तक हम शिक्षा को अध्यात्म के द्वारा वैल्यू आधारित नहीं बनाते हैं तब तक हम लोगों को वास्तविक शिक्षा नहीं दे पाएगें

डॉ. जतिन एच सोनी, उपकुलपति, स्वर्णिम स्पोर्टस यूनिवर्सिटी, गांधीनगर

मूल्यों की शिक्षा आज बेहद जरूरी

पाठ्यक्रम, शिक्षा की आत्मा होती है। यदि हम शिक्षा में नैतिक शिक्षा को अनिवार्य कर देते हैं तो छात्र जब फील्ड में जाएगा तो अन्य शिक्षा के साथ इसे भी साथ ले जाएगा। नैतिक शिक्षा और अध्यात्म का ज्ञान भी उसके साथ रहेगा। जब ज्ञान साथ रहेगा तब वह जो भी कार्य करेगा ज्ञान के अनुसार ही करेगा। नैतिक शिक्षा, अध्यात्म, और मूल्यों को जब हम सिलेबस में लेते है तो विद्यार्थी पढ़कर जब समाज का एक हिस्सा बनेगा तब उसके पास बहुत सारी विद्याएं, विजडम रहेगा और वह निश्चित ही इस विद्या का कहीं न कहीं उपयोग करेगा। इससे वह खुद सफल होगा और परिवार सफल होगा एवं समाज को भी सुधारने में मदद करेगा। आज के जो हालात है उसमें सबसे ज्यादा मूल्यों की शिक्षा जरूरी है। लोग मूल्य और अध्यात्म को पीछे छोड़ते जा रहे हैं।

आशीष डोंगरे, कुलपति, रामकृष्ण धर्मार्थ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय भोपाल, मध्यप्रदेश

मूल्य आधारित शिक्षा प्रारंभ करना सराहनीय

आज पूरे विश्व में तकनीकी रूप से निरंतर प्रगति हो रही है। इसके साथ ही मूल्यों का पतन भी जारी है। जिसे ध्यान में रखते हुए मूल्य शिक्षा एवं आध्यात्मिकता का पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। इस पाठ्यक्रम को प्रारंभ करने में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। आज समाज में अनेक आडम्बर, कुप्रथाएं एवं आपसी मतभेद व्याप्त है। ऐसे समय में मूल्य आधारित शिक्षा प्रारंभ करना बहुत ही सराहनीय कदम है।

डॉ. एम. रामानाथन, उपकुलपति, अन्नामलाई विश्वविद्यालय, तमिलनाडू

विशेष जानकारी के लिए निम्न मोबाइल नम्बर पर सम्पर्क करें
9414082092, 9413384864, 9442222157
ईमेल: rpgupta108@gmail.com, bk.suman@gmail.com
bkpandiamani@gmail.com

दुनियाभर में फैला ईश्वरीय शिक्षा का प्रकाश

वर्तमान समय मूल्यों के पतन के दौर से गुजर रही दुनिया के लिए भारत एक आशा की किरण बनकर उभरा है। जहां 20 वीं सदी के दूसरे एवं तीसरे दशक में यूरोप के विद्वानों ने शांति एवं स्वयं की पहचान एवं आध्यात्मिक सत्य को समझने के लिए भारत की यात्राएं की। वहीं श्रीमद् भागवत गीता एवं अन्य धर्म शास्त्रों का जर्मन एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया गया। साथ ही विक्टोरिया युग के अंत के समय स्वामी विवेकानंद ने पश्चिम देशों की यात्राएं कर भारतीय अध्यात्म और योग का संदेश दिया।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद स्वामी योगानंद ने योग की विधियों का प्रचार अमेरिका में किया। यह वह समय था जब विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों का सम्मेलन हो रहा था और भूतकाल की विघटनकारी दूरी समाप्त हो रही थीं। प्रथम विश्व युद्ध की विनाशलीला के बाद बहुत से लोग अपने धार्मिक एवं नैतिक मूल्यों का गहराई से पुन: मूल्यांकन करने लगे। यूरोप में 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एक जबरजस्त आध्यात्मिक जागृति का दौर प्रारंभ हुआ, जब पश्चिम के विद्वानों ने पूर्व के अध्यात्म का अध्ययन किया और उसे अपने साहित्य, कला एवं संस्कृति में उतारने लगे।

राजयोग का अभ्यास करते हुए विदेशी भाई-बहनें।

आध्यात्मिक उन्नति के लिए व्यक्तिगत प्रयास आवश्यक

आध्यात्मिकता जीवन का एक ऐसा पहलू है जिसमें हमें सफलता के लिए व्यक्तिगत रूप से प्रयास करने होते हैं। आध्यात्मिकता के लिए आत्म-अनुशासन जरूरी है, क्योंकि यह एक आंतरिक अभ्यास की प्रक्रिया है। आध्यात्मिकता का अर्थ है अध्ययन, योगाभ्यास, एवं अपने अंतर्मन की जांच करने के लिए स्वनिरीक्षण करना। आत्म चिंतन करने वाले व्यक्ति आध्यात्मिकता के क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए उन्नति को प्राप्त करते हैं। अनुभवी एवं योग्य आध्यात्मिक शिक्षकों के दिशा-निर्देशन में योगाभ्यास करने से आध्यात्मिक अनुभवों का लाभ मिलता है।

अनुशासन हैं जरूरी

आंतरिक चेतना और विवेक में परिवर्तन के लिए व्यवहार को नियंत्रित करने वाले प्रेरकों के विश्लेषण के लिए नियमित आंतरिक अनुशासन का पालन करने की अध्यात्म में आवश्यकता होती हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान से होता विवेक जागृत

अनेक धार्मिक अनुभवों से स्पष्ट होता है कि लोगों को नैतिकता के मार्गदर्शन की आवश्यकता है जिससे वे यह जान सके कि कब, क्या और कैसे करना है। यह माना जाता है कि लोग मूलरूप से अपवित्र, कमजोर एवं अज्ञान हैं इसलिए वे गलत कर्म करते हैं। उनको उच्च नैतिक सत्ता के निर्देशन की आवश्यकता है जबकि आध्यात्मिक अवधारणा के अनुसार गलत कार्य करने वाला व्यक्ति भी मूलरूप से पवित्र तथा श्रेष्ठ है। आध्यात्मिक पतन होने से ही व्यक्ति गलत कार्य करता है। कोई व्यक्ति अच्छा निर्णय लेने के बाद भी गलत कार्य व्यक्तिगत कमजोरी तथा आध्यात्मिक नियमों एवं कर्मों के परिणाम का सत्य ज्ञान न होने के कारण गलत कार्य करता है। आध्यात्मिक ज्ञान का मनन चिंतन एवं योगाभ्यास विवेक शक्ति को जागृत कर शक्तिशाली बनाता है तथा आंतरिक नैतिक मार्गदर्शन करने वाली शक्ति को कार्यशील बनाता है। यदि सभी व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि से विवेकशील बन जाएं तो किसी बाहरी दिशा-निर्देश और कानूनी बाध्यता की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है क्योंकि इस आध्यात्मिक विवेक की अवस्था में मनुष्य न्यायपूर्वक कार्य करता है। अध्यात्म धीरे-धीरे आंतरिक नैतिक शक्ति तथा मूल्यों का विकास करता है। इसीलिए वर्तमान समय में सामाजिक समस्याओं का मूल कारण मूल्यों के पतन में निहित है और इसका एकमात्र समाधान अध्यात्म है।

आध्यात्मिकता का अर्थ है कि आंतरिक शक्ति या आत्मा मूल है। पदार्थों की सत्ता दूसरे स्थान पर है तथा यह आत्मा पर निर्भर है। आध्यात्मिक व्यक्तित्व सम्पन्न व्यक्ति जन्मजात आंतरिक मूल्यों एवं गुणों को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्त करता है। आध्यात्मिक चेतना समाप्त होने पर मनुष्य की व्यक्तिगत शक्तियां समाप्त हो जाती है। स्वयं को शरीर समझने से अल्पकालिक भौतिक मूल्य मन में प्रभावशाली होकर अंतर्रात्मा की आवाज को क्षीण कर देते है। इससे व्यक्ति नकारात्मक कार्यों के समक्ष समर्पण कर देता है। जब अंतर्रात्मा की आवाज बंद हो जाती है तब बाह्य जगत की बातें मन को दिग्भ्रमित करने लगती है। इसलिए मनुष्य के जीवन में मूल्यों के उत्थान के लिए आध्यात्मिक शिक्षा अपरिहार्य है।

पश्चिमी देशों में बढ़ा योगाभ्यास

1960 में यूरोप, अमेरिका और आस्ट्रेलिया के विद्वानों एवं आध्यात्मिकता के इच्छुकों ने एक बार फिर से ज्ञान व प्रेरणा पाने के लिए भारत वर्ष की ओर कदम बढ़ाया। जीवन की भागदौड़ एवं बढ़ते मानसिक तनाव के चलते पिछले 40 वर्षों में पश्चिमी देशों के लोगों के दैनिक जीवन में मेडीटेशन का तेजी से प्रचलित हो रहा है। योगाभ्यास इन दिनों पत्र-पत्रिकाओं, लेखों, पुस्तकों एवं पाठ्यक्रमों में मुख्य विषय वस्तु के रूप में स्थान प्राप्त कर रहा है। बहुत से डॉक्टर और रोगों का उपचार करने वाले विशेषज्ञ जीवन की मानसिक तनावों, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के अतिरिक्त मानसिक बोझ तथा कैंसर, हृदय संबंधी रोगों, मधुमेह एवं एड्स के उपचार में योगाभ्यास का परामर्श देने लगे हैं। आज चिकित्सक भी व्यसन से मुक्त होने के लिए योगाभ्यास का परामर्श दे रहे है।

आध्यात्मिक ज्ञान मनुष्य को अभय बनाता है

आध्यात्मिक व्यक्ति ही अभय होता है। आध्यात्मिक ज्ञान का व्यक्ति जिस सीमा तक स्वयं को इस भौतिक तत्वों से परे अविनाशी आत्मा का अनुभव करने में सक्षम होता है उस सीमा तक मृत्यु के भय से मुक्त होता है तथा अवश्यम्भावी मृत्यु का निश्चिंत भाव से सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार होता है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति परंपराओं एवं कर्मकांडों से मुक्त होकर स्वतंत्र मस्तिष्क से इनमें निहित सत्य का अन्वेषण करता है। वह भय और संदेह, सत्याचरण, सत्य और असत्य कर्म को अदृश्य यथार्थ तथा आयाम के संदर्भ में अच्छे प्रकार से समझता है। वह आत्म-अनुशासित, अहिंसक, पवित्र और संयमी होता है। आध्यात्मिक व्यक्ति ईमानदार, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ तथा कर्मकुशल होता है। वह अपने अंदर आध्यात्मिक शक्तियों जैसे सहनशीलता, समायोजनशीलता, अंतर्मुखता, शांति तथा समाने की शक्ति का विकास करता है। वे निर्णय शक्ति और गुणग्राही मानसिक शक्ति का विकास करते हैं। वह सर्वोच्च सत्ता के साथ मानसिक संबध के कारण आंतरिक बल पर जीवन में आने वाली चुनौतियों एवं कठिनाइयों का सदा सामना करने के लिए तैयार रहता है।

मूल्यों को धारण करने की शिक्षा दी जाती

यह अपने आपमें अनोखा संस्थान है। जो लोगों को डिग्री प्रदान किए बिना ही शिक्षित कर रहा है। इसे महाविद्यालय, उत्कृष्ट विद्यालय व दिव्य विद्यालय कहना ज्यादा उचित होगा। क्योंकि यहां मूल्यों को जीवन में धारण करने की शिक्षा दी जाती है। यह एक ही संस्थान है जिसने वो काम किया है जो और कोई नहीं कर सकता।

डॉ. हरी गौतम, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली

मूल्यों से तय होंगे जिंदगी के नए मुकाम

जैसी शिक्षा वैसी व्यवस्था यह सत्य है। भारत देश शिक्षा के क्षेत्र में हमेशा से विश्व गुरु के रूप में विख्यात रहा है। दूसरे बड़े देश भले ही भौतिक शिक्षा में अपनी अलग पहचान रखते हैं, परन्तु भारत देश में अलौकिक (ईश्वरीय), संस्कारित और मूल्यनिष्ठ शिक्षा के आगे पूरी दुनिया नतमस्तक रही है। वर्तमान समय में पुन: अलौकिक शिक्षा से नए समाज का निर्माण हो रहा है। यह एक ऐसी शिक्षा है जिससे ना केवल व्यक्तित्व निर्माण होता है बल्कि सुन्दर, सुव्यवस्थित और मूल्यनिष्ठ समाज की भी स्थापना हो रही है।

*ईश्वरीय शिक्षा का अध्ययन करते भाई-बहन। **इनसेट:** ईश्वरीय शिक्षा पढ़ाते हुए राजयोगिनी दादी जानकी।*

यह जाहिर है कि व्यक्ति को जैसी शिक्षा मिलती है। वह वैसे ही सपने बुनता है और वैसी ही अपनी सोच विकसित करता है। यह सोच ना केवल उसके लिए ही होती है, बल्कि वह समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करती है। समाज की व्यवस्था और संविधान दोनों ही इसी धुरी पर आधारित होते हैं। भारत में मूल्य शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। भारत में शिक्षा का इतिहास प्राचीन काल से है। पहले के जमाने में बच्चों को गुरूकुल में भेजने की परम्परा थी। जिससे बच्चों में आध्यात्मिकता, बड़ों के प्रति आदर, सम्मान, और श्रेष्ठ संस्कार को जागृत किया जा सके। परन्तु बदलते दौर में जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर गिरा सामाजिक व्यवस्थाएं भी बदलती गई।

मूल्य और संस्कार हो गए गायब

परन्तु आज हालात यह है कि अलौकिक शिक्षा का केवल नाम है। मूल्य और संस्कार गायब हो गए है। असल में असली अलौकिक शिक्षा स्वयं परमात्मा के अलावा कोई दे नहीं सकता है। यदि मनुष्य इस शिक्षा को देता तो आज इस समाज और देश की हालत यह नहीं होती, जो आज है। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की वृद्धि तो हुई, परन्तु उसमें से संस्कार और मूल्य विलुप्त हो गए। शिक्षकों का शिक्षक स्वयं परमात्मा है। चूंकि अब युगों के बदलाव का संधि काल है। ऐसे में बदल रही दुनिया में वर्तमान दुनिया के बजाए एक श्रेष्ठ दुनिया के आगमन का वक्त है।

स्वयं परमपिता परमात्मा दे रहे शिक्षा

अब स्वयं गुरूओं के गुरू, शिक्षकों के शिक्षक परमपिता परमात्मा शिव इस दुनिया में अवतरित होकर नर को नारायण और नारी को लक्ष्मी बनाने की महान शिक्षा दे रहे हैं। यह केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे दुनिया के लिए सुखद समाचार है। इसलिए हे! मनुष्यात्माओं परमात्मा इस धरती पर आ चुके है और ईश्वरीय शिक्षा लेने का यह सुनहरा अवसर कही छूट न जाए।

नई दुनिया का मार्ग खोलती ईश्वरीय शिक्षा

यह बिल्कुल स्पष्ट है कि ईश्वर की शिक्षा किसी भी सूरत में मनुष्य का कल्याण करने वाली ही होगी, क्योंकि इसमें न तो कोई स्वार्थ होगा और न ही हिंसात्मक गतिविधियों की जानकारी बल्कि अहिंसा परमोधर्म के प्रति प्रेरणादायी ही होगी।

परमात्मा ही दे सकते है ईश्वरीय शिक्षा

ईश्वरीय शिक्षा केवल परमात्मा द्वारा ही दी जा सकती है। इंसान कभी भी ईश्वरीय शिक्षा का दाता नहीं हो सकता। वर्तमान समय की ईश्वरीय शिक्षा के लिए कोई कागजी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसा भी नहीं है कि इसकी परीक्षा वर्ष या दो वर्ष में एक बार होती है। बल्कि ईश्वरीय शिक्षा जीवन के प्रत्येक पहलू पर आधारित होती है। जीवन में सत्य और असत्य के बीच के द्वन्द, धर्म और अधर्म के बीच की लड़ाई में ही विजय का मार्ग प्रशस्त करती है।

इस शिक्षा का परिणाम जिन्दगी के अंतिम श्वांस तक मिलता है। जिन्दगी के हर कदम में विजय श्री का आशीर्वाद हमेशा मिलता है। क्योंकि इस शिक्षा का शिक्षक हमेशा अपने बच्चों के साथ होता है। इसलिए इसका अंतिम रिजल्ट युग बदलाव के अंतिम क्षणों में सर्वोच्च और मान्य होता है। इसका प्रमाण-पत्र लोगों के साथ-साथ स्वयं परमात्मा देता है। यह पढ़ाई पढ़ने वाले व्यक्ति के लिए एक सुखद और सुन्दर दुनिया पारितोषिक के रूप में मिलती है।

यह शिक्षा स्वयं का नई दुनिया के लिए मार्ग तो खोलती ही है। साथ में दूसरों के लिए भी प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती है। जिसके प्रकाश में व्यक्ति इस शिक्षा के विद्यार्थी बन दैवी स्थिति को प्राप्त करता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय इस शिक्षा का मूल केन्द्र है और परमात्मा इसका सर्वोच्च शिक्षक।

लौकिक शिक्षा के मायने

जहां तक सवाल लौकिक शिक्षा का है। आज के युग में स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में ज्यादा से ज्यादा भौतिकवादी शिक्षा पर ही जोर दिया जाता है। इसका नतीजा हम सबके सामने है कि संस्कार विहिन समाज का तेजी से बढ़ना। न तो बच्चों का माता-पिता के प्रति सम्मान रहा और न ही शिक्षकों के प्रति। इसके कारण पारिवारिक संरचना छिन्न-भिन्न हो गई और वस्तुओं की कीमतें तो बढ़ी, परन्तु इंसान की कीमतें कम हो गई। यह इतने विशाल रूप में हो रहा है कि मानवता अपने स्थिति पर आंसू बहा रही है।

अलौकिक शिक्षा

अलौकिक (ईश्वरीय) शिक्षा का मतलब होता है भौतिक शिक्षा के साथ ईश्वरीय शिक्षा का समावेश। अलौकिक शिक्षा हमेशा सद्मार्ग, सद्भाव तथा वसुधैव कुटुम्बकम का मार्ग खोलती है। सतयुग, त्रेतायुग के बाद द्वापरयुग में आध्यात्मिकता और संस्कारों को जीवन में उतारने के लिए अलौकिक शिक्षा का कार्य गुरूकुल आदि को था। जिसमें शिक्षा लेने वाले बच्चे संस्कारित और मार्यादाओं का पालन करने वाले होते थे। अब स्वयं परमात्मा हमें ईश्वरीय शिक्षा देकर दैवी स्वराज्य में जाने योग्य बना रहे है।

संस्कारों को दिव्य बनाना ही मूल्य शिक्षा का उद्देश्य

वर्तमान समय सभी क्षेत्रों में मूल्यों की गिरावट हो रही है, जिसका परिणाम जीवन के हर क्षेत्र में देखने को मिल रहा है और इसका सबसे ज्यादा प्रभाव हमारे पर्यावरण पर पड़ा है। इस कारण पारिस्थितिकी के साथ हमारी समरसता नष्ट होती जा रही है। ऐसे संकट के समय में मूल्यों को परिवर्तन करने, जीवन में खुशहाली और सम्पन्नता लाने के लिए आध्यात्मिक एवं मूल्य शिक्षा ही एकमात्र उपाय है। आज समाज में आर्थिक प्रगति अपने चरम पर है, लेकिन हिंसा, आतंकवाद, भय, अस्थिरता, बेकारी और विभिन्न प्रकार की समस्याएं बढ़ती ही जा रही है। इनको रोकने तथा परिवर्तन करने के लिए हरेक व्यक्ति के जीवन में पर्याप्त ज्ञान, गुण और मनोबल की आवश्यकता है। मनोबल को बढ़ाना और जीवन को दिव्यीकरण व संस्कारों को श्रेष्ठ बनाना ही मूल्य शिक्षा का उद्देश्य है। इस प्रयास में शिक्षा प्रभाग विभिन्न शिक्षकों, अभिभावकों एवं समस्त सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन लाने के लिए मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में जोड़कर विभिन्न स्तर पर जैसे स्कूल, कॉलेजों तथा शिक्षकों को भी प्रशिक्षण देने का प्रयास चल रहा है। इसमें अभी तक कई विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में इसका सफल प्रयोग हुआ है। मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने का कार्य हमें सिर्फ शिक्षकों के कंधों पर ही नहीं डाल देना चाहिए बल्कि मूल्यों की शिक्षा को अन्य क्षेत्रों में भी लागू करना चाहिए जिससे लोग मूल्यों तथा नैतिकता के संबंध में भी अपने उत्तरदायित्व को समझ सकें। मुझे आशा है कि इस संबंध में एक नए चरित्र निर्माण की क्रांति आएगी जो नया भारत को विकसित करने में सफल होगी और विश्व का एक आदर्श एवं अनुकरणीय विधि-विधान होगा।

ब्रह्माकुमार मृत्युंजय, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, राजस्थान

मानव मूल्यों की शिक्षा भी जरूरी

आज तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को मानव-मूल्यों की शिक्षा भी जरूरी है। असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय के मार्ग पर चलते हुए अच्छा आचरण करें तथा अच्छा काम करके देश का नाम रोशन करें। आज के वैश्वीकरण के युग में यह और भी जरूरी हो गया है कि हम देश की शिक्षा के स्तर को सुधारकर उसे विश्व स्तर का बनाएं। आधुनिक शिक्षा पद्धति में आधुनिकता के साथ परम्परा का सम्मिश्रण भी जरूरी है।

रामनरेश यादव, राज्यपाल, मध्यप्रदेश

...हमें अच्छे शिक्षक बनाने होंगे

देश की युवा शक्ति का टेलेंट सही दिशा में इस्तेमाल नहीं हो रहा है। हमारी शिक्षा आज पैसा बनाने की मशीन बन गई है। भारत का पाश्चात्यीकरण किए बिना, उसे आधुनिक बनाने की आवश्यकता है। देश का निर्माण करने के लिए प्रतिभाओं का विकास करने की जरूरत है। शिक्षा राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि हम एक अच्छी शिक्षा व्यवस्था चाहते हैं तो हमें अच्छे शिक्षक बनाने होंगे।

नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री, गुजरात

मनुष्य का आध्यात्मिक विकास भी जरूरी

मूल्य आधारित शिक्षा और अध्यात्म से ही विश्व को भौतिकवाद से उत्पन्न समस्याओं से बचा सकते हैं। शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान, कौशल और नागरिकता के संस्कार देना है। विकास केवल भवनों, पुल, पुलियाओं का निर्माण करना नहीं है, बल्कि इसमें मनुष्य का आध्यात्मिक विकास भी शामिल है।

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

नैतिकता और आध्यात्मिकता से समाज का भला

सदियों से लोग हिन्दुस्तान के प्रति खिंचे चले आते हैं और यहां से चरित्र की शिक्षा ग्रहण करते हैं। पूर्व में नालन्दा विश्वविद्यालय तथा अन्य स्थानों पर विश्व के अनेक विद्यार्थी भारत आकर यहां की संस्कृति एवं सभ्यता से अवगत होते थे। चीन जैसे देशों से भी उच्चकोटि के लेखकों ने यहां आकर शिक्षा एवं समग्र जीवनशैली का अपने पुस्तकों में उल्लेख किया है। यह अभियान शिक्षा प्रणाली में नैतिकता और आध्यात्मिकता के समावेश से देश व समाज का भला करने में कारगर साबित होगा।

डॉ. योगानन्द शास्त्री, विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली

मूल्यों से होता आंतरिक शक्तियों का विकास

जो लोग मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते हैं तो उनमें आंतरिक शक्तियों का विकास होता है। हमारे मूल्य ही हमारे चरित्र के द्योतक होते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दी जा रही मूल्यों की शिक्षा को अपनाकर हम अपना जीवन श्रेष्ठ बना सकते हैं। जीवन में मूल्यों को धारण करने के लिए आध्यात्मिक सत्ता के साथ संपर्क स्थापित करने की दिशा में हमारा पहला कदम यह होना चाहिए कि हम भौतिकवाद के प्रभाव से मुक्त होकर आत्मिक भाव में स्थित हो जाएं। अपने नैतिक मूल्यों के बारे में जानने एवं उसका विकास करने के लिए हमें अपने आध्यात्मिक स्वरूप की पहचान आवश्यक है क्योंकि हमारे श्रेष्ठ मूल्य हमारे मन, विचारों एवं आध्यात्मिक स्वरूप में निहित होते हैं न कि हमारे भौतिक स्वरूप में।

ब्रह्माकुमार निर्वैर, अध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

ब्रह्माकुमारीज़ अद्भुत विश्व विद्यालय

ब्रह्माकुमारीज़ विश्व विद्यालय में वास्तविक शिक्षा दी जा रही है। यहां लोगों को एटीट्यूट सिखाया जाता है। यहां नैतिक मूल्यों की शिक्षा व्यवहार से सिखाई जाती है। एक दिन ये जरूर पूरे विश्व में विख्यात होगा। हम पहले लोगों को आदमी बनाने पर ध्यान देते थे, लेकिन आज डिप्लोमा और डिग्री देने पर ध्यान देते हैं। वर्तमान शिक्षा हमारे जीवन में मात्र 5 प्रतिशत ही काम आती है। आज के समाज में नैतिक मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा की बेहद जरूरत है। विश्व में गिरते मूल्यों के पतन को हम मूल्य शिक्षा से ही बचा सकते हैं। इस अद्भुत विश्व विद्यालय में हर एक भाई-बहन के चेहरों पर खुशी की चमक स्पष्ट देखी जा सकती है।

संजय बियानी, डायरेक्टर, बियानी ग्रुप ऑफ कॉलेज, जयपुर

... तो विकसित हो जाएगी सोलह कलाएं

आज के प्रतिस्पर्धा और तनाव भरे युग में सुख-शांति पूर्वक जीना भी एक कला है। प्राय: यह देखा जाता है कि जिसके पास धन है उसके पास स्वास्थ्य नहीं होता है और जिसके पास स्वास्थ्य होता है उसके पास धन नहीं होता है। राजयोग के अभ्यास से जीवन में संतुलन आता है। धन को सर्वप्राप्तियों और सुखों का आधार मानकर इसकी प्राप्ति के लिए स्वास्थ्य और मूल्यों को गंवाने की भूल करने के कारण ही जीवन में असंतुलन और दुख उत्पन्न हुआ है। परंतु जीवन में वास्तविक सुख-शांति और समृद्धि श्रेष्ठ मानवीय कलाओं के विकास से ही आती है। ये सोलह कलाएं इस प्रकार है-

- **शिक्षा देने की कला:** विनम्रता और कुशाग्रता के साथ शिक्षा इस प्रकार देना चाहिए जो दूसरा सहज ढंग से ग्रहण कर सके।
- **लेखन कला:** यह कला व्यक्ति को वैचारिक रूप से ख्याति प्रदान करती है।
- **प्रशासन की कला:** अपनी कर्मेन्द्रियों और मन बुद्धि पर नियंत्रण रखकर मानवीय संवेदनाओं के साथ कर्म क्षेत्र में आने पर यह कला जीवन में आती है।
- **हास्य कला:** नीरसता को समाप्त कर जीवन में रमणीकता लाने के लिए यह कला आवश्यक है।
- **स्वस्थ्य रहने की कला:** स्वस्थ्य मन हमारे स्वास्थ्य का रहस्य है। सकारात्मक चिंतन से इस कला का विकास होता है।
- **व्यवहार की कला:** शुभभावना के साथ दूसरों के साथ संपर्क में आने से इस कला का विकास होता है।
- **बातचीत की कला:** आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर बातचीत करने से यह कला निखरती है।
- **परिवर्तन की कला:** राजयोग के निरंतर अभ्यास से परिवर्तन करने और स्वयं परिवर्तित होने की कला आ जाती है।
- **व्यर्थ को श्रेष्ठ बनाने की कला:** सदा गुण ग्रहण करने की प्रवृत्ति से इस कला का विकास होता है।
- **दूसरों को अपना बनाने की कला:** दूसरों के गुणों को स्वीकार करने और सम्मान देने से यह कला आती है।
- **सीखने की कला:** जीवन में संपूर्णता के लक्ष्य को रखने से इस कला का विकास होता है।
- **नेतृत्व कला:** आध्यात्मिक एवं मानवीय गुणों से इस कला का विकास होता है।
- **आगे बढ़ने की कला:** जीवन में सत्यता साहस और निर्भयता से इस कला का विकास होता है।
- **समाने की कला:** सहनशीलता और धैर्यता से इस कला का विकास होता है।
- **पालना करने की कला:** उदात्त और उदार भाव होने से यह कला जीवन में आती है।
- **तनावमुक्त जीवन जीने की कला:** आत्मा और परमात्मा की अनुभूति होने से यह कला जीवन में विकसित होती है।

नौजवान पीढ़ी को यह शिक्षा बेहद जरूरी

आज पारिवारिक शिक्षा का ह्रास हुआ है। एजुकेशन का भी स्तर गिरा है। शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध भी बदल गया है। आज शिक्षक का जो सम्मान समाज में होना चाहिए वह नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिया हुआ ज्ञान कहता है कि परमात्मा एक है और हम सभी आत्माएं हैं। इस शिक्षा की जरूरत आज नौजवान पीढ़ी को बेहद जरूरी है। विद्यार्थियों में सकारात्मक चिंतन का विकास करना होगा।

डॉ. केसी सिंघल, उपकुलपति, नेशनल मेडिकल इंस्टीट्यूट, जयपुर

सराहनीय कार्य

आज विज्ञान एवं विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा का व्यापक विकास हुआ है लेकिन व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में तनाव, दु:ख और अशांति बढ़ी है। इससे सिद्ध है कि हमने अपने जीवन में कुछ खोया है और अपने श्रेष्ठ लक्ष्यों से विरक्त हुए हैं। ऐसे समय पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मूल्यों की पुनर्स्थापना एवं पर्यावरण की जागृति का कार्य बहुत ही सराहनीय और अनुकरणीय है।

प्रो. डीके बंदोपाध्याय, कुलपति, इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय

पीस ऑफ माइंड चैनल ईश्वरीय उपहार

'पीस ऑफ माइंड' दुनिया का एकमात्र ऐसा चैनल है, जिसमें विज्ञापन नहीं है। सभी को ईश्वरीय निमंत्रण और परमात्मा का सत्य परिचय मिले। इसके लिए विज्ञान के साधनों का अहम योगदान है। जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित एवं प्रसारित होता है। आज इस चैनल से जुड़कर लाखों लोगों ने अपने जीवन को नई दिशा दी है। कई लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए है। आधुनिक युग में आज चैनलों में जहां अश्लीलता, फूहड़ता परोसी जा रही हैं वहीं पीस ऑफ माइंड चैनल लोगों के जीवन में आशा की एक नई किरण बनकर सामने आया है। इस चैलन के द्वारा भारतवर्ष में सकारात्मक चिंतन, मेडिटेशन एवं वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से लोगों के आम जीवन से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। जिसे वीडियोकान, रिलायंस डीटीएच के अलावा केबल टी.वी. पर कहीं भी देखा जा सकता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें मो... 8140211111, 7891109999, ईमेल: karunabk@gmail.com

ईश्वरीय संदेश

आपको बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि स्वयं परमपिता शिव परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है। परमात्मा पिछले 77 वर्षों से नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रहे है। विषय विकारों से ग्रसित, इस पतित कलियुगी दुनिया को पावन बनाने परमात्मा आते है। परमात्मा साकार मनुष्य तन का आधार लेकर हम आत्माओं को स्वयं की सत्य पहचान कराते है। परमात्मा सच्चा गीता ज्ञान देकर राह से भटकी हुई आत्माओं को मुक्ति और जीवनमुक्ति का रास्ता बताते है। परमपिता परमात्मा ने बताया कि तुम मनुष्यात्माओं का वास्तविक घर परमधाम, निर्वाणधाम, ब्रह्मलोक है। तुम्हारा वास्तविक घर वहीं है। इस सृष्टि पर तुम आत्माएं अपने ड्रामा अनुसार पार्ट बजाने आती हो। अब फिर मैं तुम्हें वापस ले जाना आया हूं। इसलिए इस अज्ञान निद्रा से जागों और 21 जन्मों के राज्य भाग्य का वर्सा मुझ से लेकर अपना भाग्य बनाने का सुअवसर है। गीता में भी भगवान ने कहा है कि मैं कल्प-कल्प के संगमयुगे आते हूं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता:

युनिवर्सिटी में बनाया मेडिटेशन सेंटर

आज हम पश्चिमी सभ्यता में पड़े हुए नर-नारी अध्यापक कहलाते हैं। हमारे गुरुकूलों में जो शिक्षा दी जाती थी आज उसे आज खत्म कर दिया गया है। आज सारी शिक्षा अनुशासनहीन हो गई है। मैं यहां आकर बहुत खुश हूं कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मूल्यों की स्थापना की दिशा में शिक्षा दी जा रही है। योग-विज्ञान के कारण ही आज भारत का विश्व में नाम है। हमारी युनिवर्सिटी में एक मेडिटेशन सेंटर बनाया गया है। आध्यात्मिक शिक्षा आज समय की मांग है और हमें इसे स्वीकार करना होगा।

प्रो. प्रेम कुमार धोसला, उपकुलपति, सुलिनी विश्वविद्यालय, सोलन

चुनौतियों से निपटने में अध्यात्म जरूरी

अगर हम अपने कर्म में मूल्यों को अपनाएं तो हमारा जीवन सुखी और संपन्न हो सकता है। वर्तमान चुनौतियों का सामना करने के लिए अध्यात्म का सहारा लेना ही पड़ेगा। यह शिक्षा हमारे मनोबल को बढ़ाती है। समाज को महत्वपूर्ण बनाने में शिक्षकों का रोल बहुत ही महत्वपूर्ण होता है।

राजेन्द्र सिंह चिप, शिक्षामंत्री एवं राष्ट्रपति पदक से सम्मानित,जम्मू कश्मीर

प्रकाशक: ब्रह्माकुमार करुणा द्वारा मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन विभाग ब्रह्माकुमारीज़ के लिए प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: मोबाइल 9413384884, 9414156615, 9414193999 फोन: 02974-228230, Email: bkmediaprhq@gmail.com